B.A. (Hons) Part I
Philosophy – Paper I
Topic – जैन दर्शन का बंधन और मोक्ष विचार
Dr Sacchidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

अन्य भारतीय दर्शनों की तरह जैन दर्शन भी बंधन एवं मोक्ष सिद्धान्त में विश्वास करता है। जैन दर्शन में कहा गया है कि जीवों में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति और अनंत आनन्द आदि पूर्णताएँ सन्निहित है लेकिन बंधन की अवस्था में ये सारी पूर्णताएँ उसीप्रकार ढक दी जाती है जिसतरह बादल के कारण सूर्य का प्रकाश ढक जाता है। जैन दर्शन में बतलाया गया है कि जीव शरीर के साथ संयोग की कामना करता है। जैन दर्शन के अनुसार शरीर का निर्माण पुदगल कणों से हुआ है। उसप्रकार जैन दर्शन का कहना है कि जब जीव का पुदगल से संयोग होता है तो वही स्थिति बंधन की स्थिति है। अज्ञान से अभिभूत रहने के कारण जीव में चार वासनाएँ जैसे क्रोध, अहंकार, लोभ और मोह आ जाती है। इन्हीं वासनाओं से वशीभूत होकर जीव शरीर की ओर लालायित रहता है। वह पुदगल कणों को अपनी ओर आकृष्ट करती है। पुदगल कणों को आकृष्ट करने के कारण इन कुप्रवृतियों को 'कषाय' कहा जाता है। जैन दर्शन में बतलाया गया है कि जीव किसप्रकार पुदगल कणों को अपनी ओर आकृष्ट करेगा यह जीव के पूर्वजन्म के कर्मों के अनुसार निश्चित होता है। इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि जीव अपने कर्म के अनुसार ही पुदगल कणों को आकृष्ट करता है और जीवों के शरीर की रूप-रेखा कर्मों के द्वारा

निश्चित होती है। चूँकि जीव अपने कर्म के अनुसार ही पुद्गल-कण को आकृष्ट करता है, इसलिए आकृष्ट पुद्गल-कण को कर्म पुद्गल कहा जाता है। वह अवस्था जब कर्म पुद्गल जीव की ओर प्रवाहित होते हैं, 'आस्रव' कहा जाता है। जैन दर्शन के अनुसार 'आस्रव' जीव का स्वरूप नष्ट कर देता है और जीव को बंधन की ओर ले जाता है। इसप्रकार जब ये पुद्गल-कण जीव में प्रविष्ट कर जाते हैं तो उस अवस्था को बंधन कहा जाता है। जैन दर्शन में बंधन दो प्रकार का होता है। ① भाव बन्ध ② द्रव्य बन्ध। जैन दर्शन के अनुसार जीव में क्रोध, अहंकार, लोभ और मोह इन चार कुप्रवृतियों के प्रवेश को भाव-बन्ध कहते हैं। जब पुद्गल कण जीव में प्रवेश कर जाते हैं, और जिसके कारण जीव और पुद्गल का संयोग हो जाता है, उसे द्रव्यबन्ध कहते हैं।

जैन दर्शन के अनुसार जीव और पुद्गल का संयोग ही बंधन है इसलिए जैन दर्शन का कहना है कि जीव का पुद्गल से वियोग ही मोक्ष है क्योंकि मोक्ष की अवस्था में जीव का पुद्गल से पृथक्करण हो जाता है। अतः मोक्ष की प्राप्ति तबतक नहीं हो सकती है जबतक नये पुद्गल कणों को जीव की ओर प्रवाहित होने से न रोका जाये। फिर नये पुद्गल-के कणों को जीव की ओर प्रवाहित होने से रोकना ही मोक्ष के लिए पर्याप्त नहीं है क्योंकि जीव में कुछ पुद्गलकण अपना घर बना चुके हैं इसलिए ऐसे पुद्गल-कणों का

उन्मूलन भी आवश्यक है। जैन दर्शन के अनुसार नये पुद्गल कणों को जीव की ओर प्रवाहित होने से रोकना 'संवर' कहा जाता है और पुराने पुद्गल के कणों का क्षय 'निर्जरा' कहा जाता है। इसप्रकार आगामी पुद्गल के कणों को रोककर तथा संचित पुद्गल के कणों को नष्ट कर जीव कर्म-पुद्गल से छुटकारा पा लेता है। इसप्रकार जैन दर्शन के अनुसार कर्म पुद्गल से मुक्त हो जाने पर जीव मुक्त हो जाता है। जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के लिए त्रिरत्न का पालन करना अनिवार्य बतलाया गया है।
① सम्यक दर्शन ② सम्यक ज्ञान ③ सम्यक चरित्र।
जैन दर्शन के अनुसार बंधन का मूल कारण अज्ञानता है इसलिए इस अज्ञानता का नाश ज्ञान से ही संभव है। जैन दर्शन में मोक्ष के लिए सम्यक ज्ञान को आवश्यक माना गया है। सम्यक ज्ञान की प्राप्ति पथ प्रदर्शक के प्रति श्रद्धा और विश्वास से ही संभव है। जैन धर्म में तीर्थंकर को पथ प्रदर्शक कहा गया है इसलिए सम्यक ज्ञान को दृढ़ बनाने के लिए तीर्थंकरों के प्रति श्रद्धा और आस्था का भाव रहना आवश्यक है। सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान को अपनाने से ही मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती है इसलिए मनुष्य को अपनी वासना, इन्द्रिय और मन को संयमित करना आवश्यक बतलाया गया है। जैन दर्शन का कहना है कि जिसप्रकार एक रोगी को रोग से मुक्त होने के लिए चिकित्सक में विश्वास, उसके द्वारा दी गई दवाओं का ज्ञान और चिकित्सक के अनुसार आचरण करना जरूरी है ठीक उसीप्रकार मोक्ष के लिए सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन और सम्यक चरित्र का सम्मिलित प्रयोग आवश्यक है।

सम्यक दर्शन के बारे में कहा जाता है कि सत्य के प्रति श्रद्धा की भावना रखना सम्यक दर्शन कहलाता है। जैन दर्शन में बतलाया गया है कि एक व्यक्ति सम्यक दर्शन का भागी तभी हो सकता है जब वह अपने को प्रचलित अंधविश्वासो से मुक्त किया हो। अतः सम्यक दर्शन का अर्थ बौद्धिक विश्वास है।
जैन दर्शन के अनुसार सम्यक ज्ञान उस ज्ञान को कहा जाता है जिसके द्वारा जीव और अजीव के मूलतत्वों का पूर्ण ज्ञान होता है क्योंकि जीव और अजीव के अन्तर को नहीं समझने के कारण ही बंधन होता है जिसे रोकने के लिए सम्यक ज्ञान आवश्यक है।

सम्यक चरित्र के संबंध में जैन दर्शन में बतलाया गया है कि हितकर कार्यो का आचरण करना और अहितकर कार्यो को वर्जित सम्यक चरित्र कहलाता है। अतः मोक्ष प्राप्ति के लिए तीर्थंकरो के प्रति श्रद्धा तथा सत्य ज्ञान की प्राप्ति ही पर्याप्त नहीं है इसलिए व्यक्ति को अपने मन, वचन और कर्म को नियंत्रण करना आवश्यक है। जैन दर्शन में सम्यक चरित्र के पालन के लिए विभिन्न प्रकार की समिति का संयम और दस प्रकार के धर्मों का पालन आवश्यक बतलाया है। साथ ही जीव और अजीव के स्वरूप पर विचार करने के लिए 12 भावो की ओर संकेत किया गया है जिसे अनुप्रेक्षा कहते है। फिर साधक को सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास से प्राप्त दुःख को सहने की योग्यता भी आवश्यक बतलाया गया है। जैन दर्शन में पंच महाव्रत, जैसे- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह का मन, वचन और कर्म से पालन करना आवश्यक बतलाया गया है।